Revitalising Rainfed Agriculture
The RRA Network

MANAGE मैनेज

NATIONAL COALITION FOR NATURAL FARMING

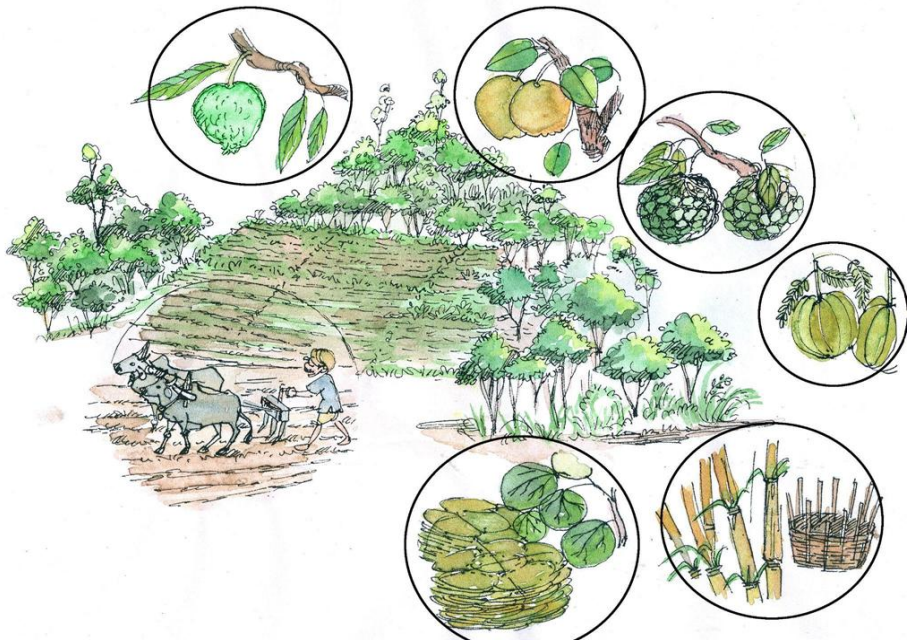

प्राकृतिक खेती के सिद्धांत

नीरज कुमार वर्मा,

उप परियोजना निदेशक, आत्मा, गया, बिहार

(मास्टर ट्रेनर, मैनेज, हैदराबाद)

ग्राम प्रधानों (मुखिया) के लिए प्राकृतिक कृषि प्रशिक्षण कार्यक्रम

आपकी मिट्टी कैसी है?

क्या हमारी मिट्टी मर रही है? मृत मिट्टी क्या है और जीवित मिट्टी क्या है?

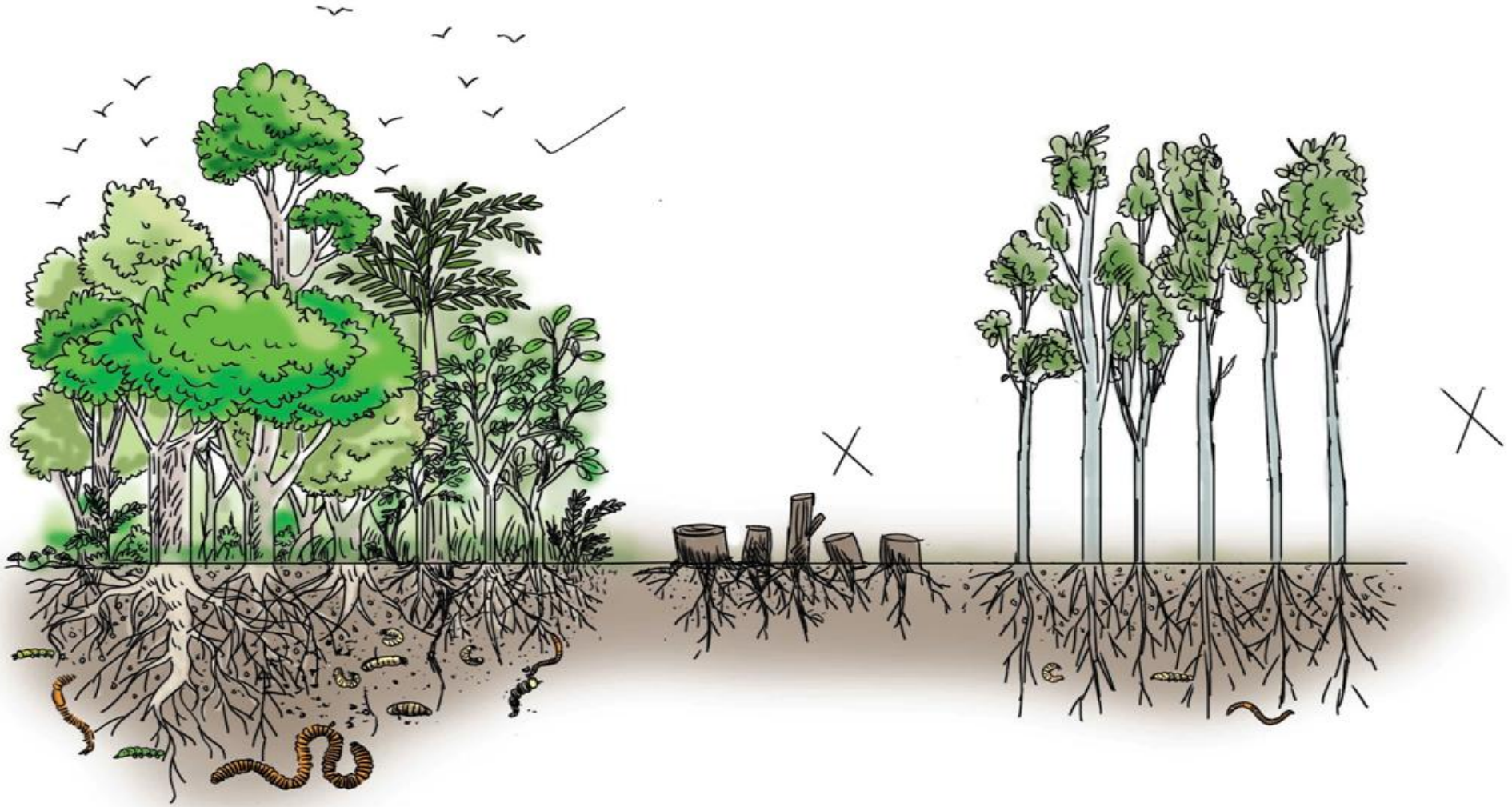

हमारी धरती जीवित क्यों होनी चाहिए? इसमें है क्या ?????

हम मिट्टी में जीवन कैसे वापस ला सकते हैं?

मिट्टी अपने पोषक तत्व कहाँ से प्राप्त करती है?

मिट्टी को जिंदा रखने
के लिए जरूरी है
कार्बनिक पदार्थ

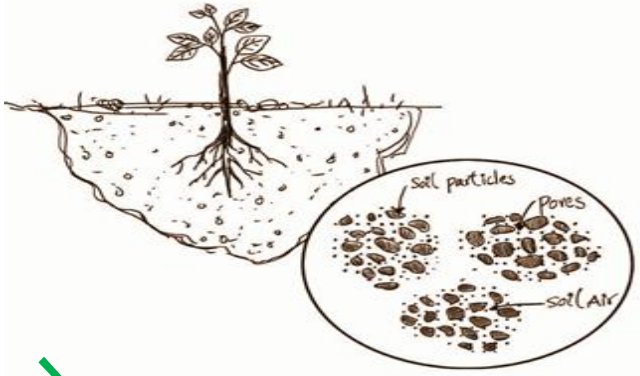

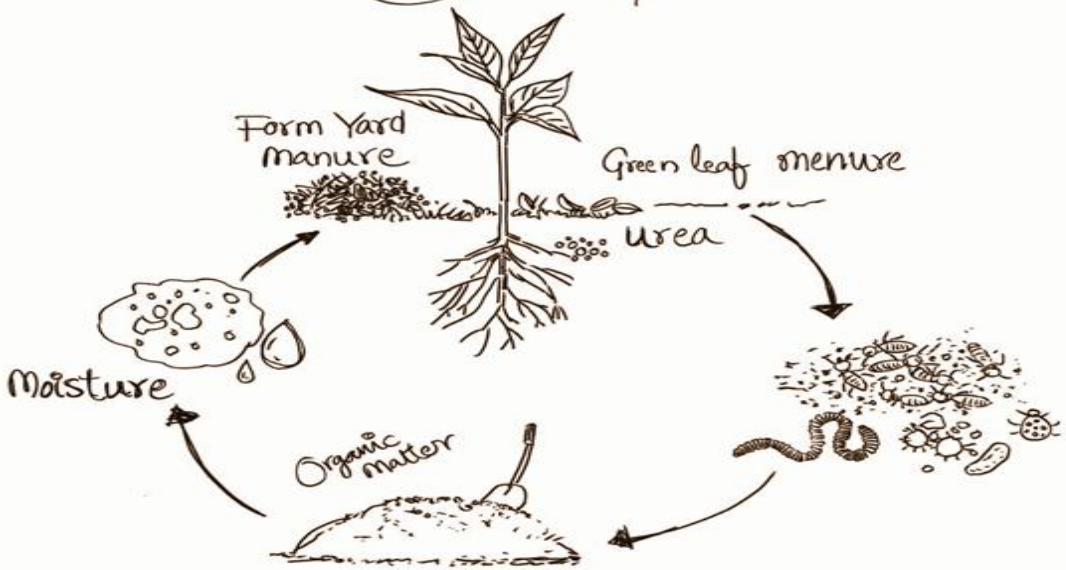

भूमि पर पानी कैसे घूमता है?

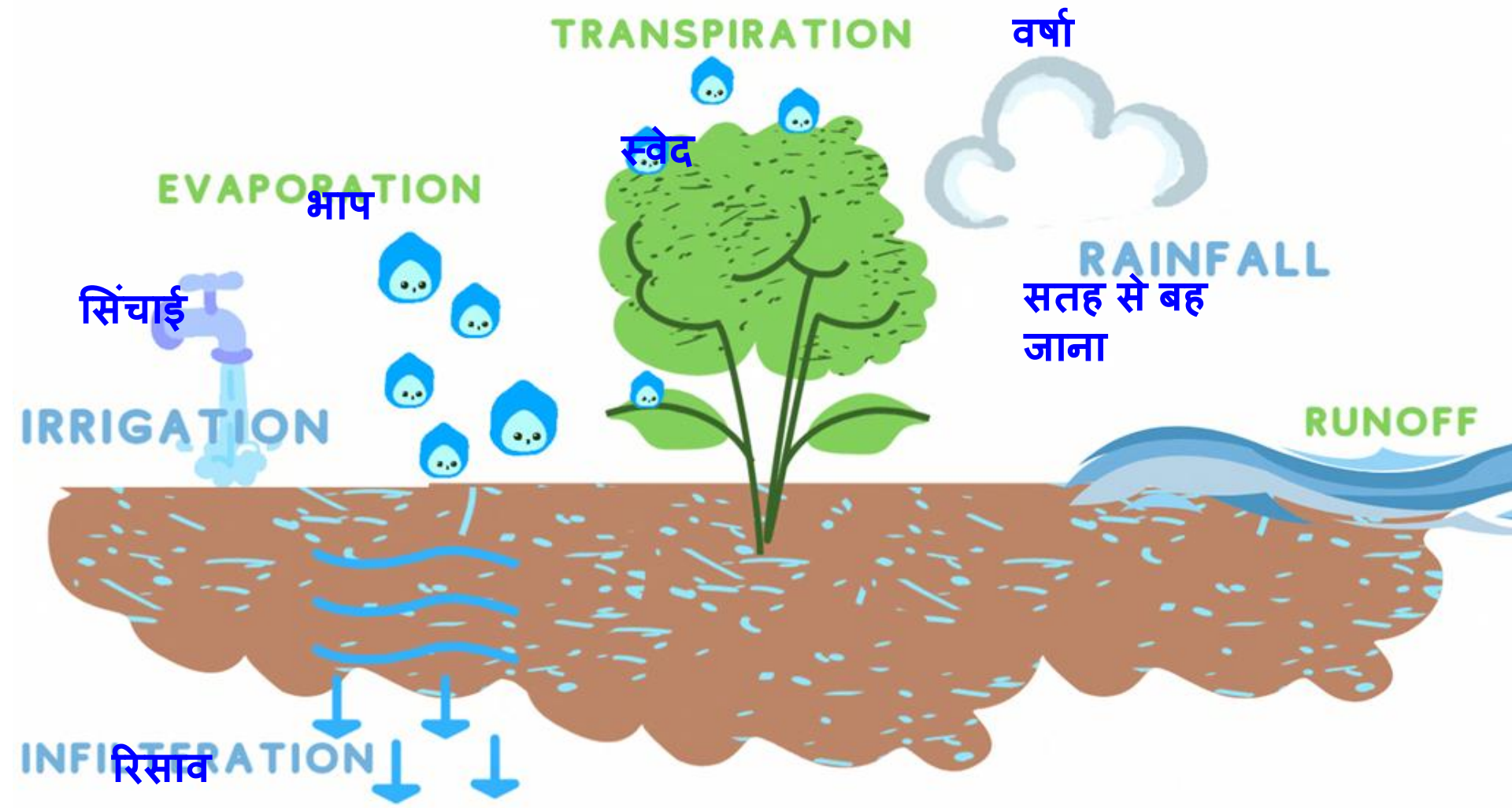

हम मिट्टी की नमी में सुधार कैसे कर सकते हैं?

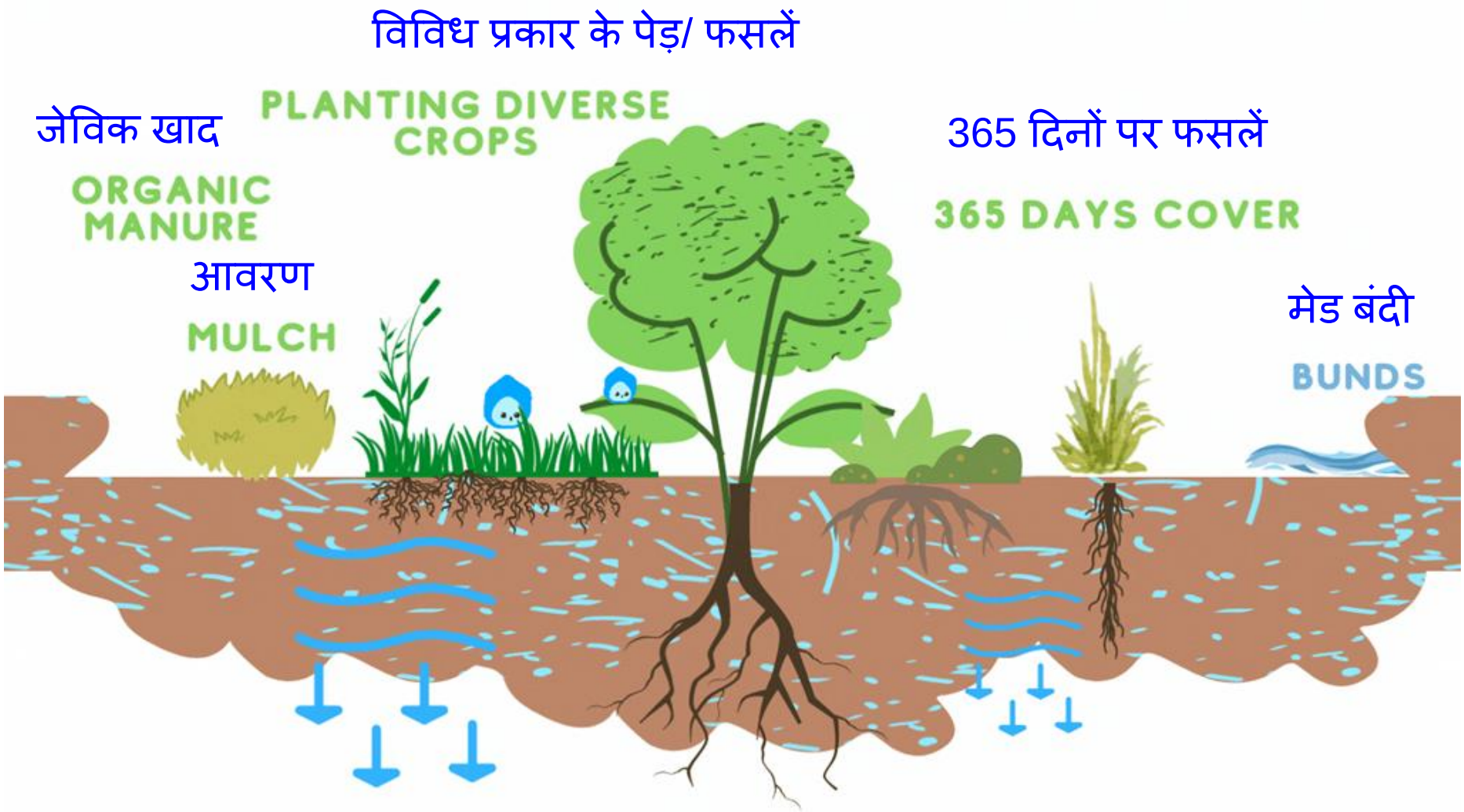

कार्बनिक पदार्थ पानी को धारण और संग्रहीत करता है!

हम जैविक पदार्थों को कैसे बढ़ा सकते हैं?

Multicropping

Composting
देसी खाद बना कर

Usage of Indigenous Seed
देशी बीज का उपयोग

Bio-stimulants
जैव उत्तेजक

Integration of Livestock
पशुधन का एकीकरण

हमने अब तक क्या सीखा?

यह सब कार्बनिक पदार्थ और रोगाणुओं के बारे में है!

फसल चक्र के दौरान और बाद में भी
मिट्टी को ढक कर रखें
(अछादाना/मल्चिंग)

- अधिक कार्बनिक पदार्थ जोड़ें

कृषि खेत जेविक पदार्थों के स्रोत के रूप में

खेत से स्रोत क्यों?

कार्बनिक पदार्थों की भारी मात्रा की आवश्यकता है, बाहर से सोर्सिंग पर्याप्त नहीं है।

- खेत से बड़ी मात्रा में स्रोत कैसे प्राप्त करें?

-फसल विविधीकरण
-देशी बीज और फसल प्रणाली
-ऑन फील्ड कम्पोस्टिंग

क्या मिट्टी को वापस जीवन में लाने के लिए कार्बनिक पदार्थ पर्याप्त हैं?

पौधों को पोषण देने के लिए जैव-उत्तेजक की भी आवश्यकता होती है

-बीजामृतम,
-घाना जीवामृतम
-जीवामृतम, आदि

कीट और रोग प्रबंधन

प्रबंधन के प्राकृतिक तरीकों के माध्यम से रोकथाम

- जाल फसलें
- हल्का और चिपचिपा जाल
- नुकूल कीट
- वानस्पतिक अर्क जैसे नीमस्ट्रा, दशपर्णी कश्यम आदि

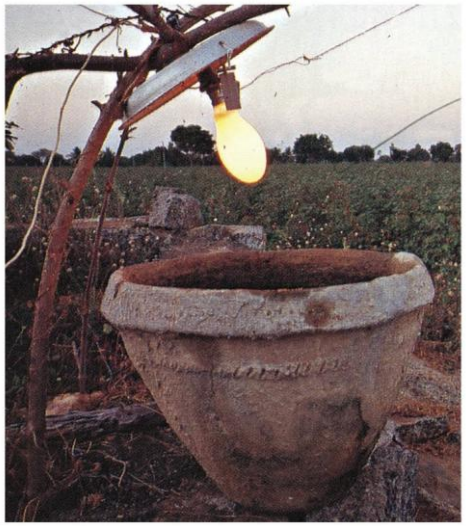

प्राकृतिक खेती के सिद्धांत

365 दिनों का फसल कवर

विविध फसलें और पेड़

देशी बीज का उपयोग

बेहतर कृषि पद्धतियों और वानस्पतिक अर्क के माध्यम से कीट प्रबंधन

पशुधन का एकीकरण

कोई सिंथेटिक उर्वरक, कीटनाशक, शाकनाशी, खरपतवारनाशी आदि का उपयोग नहीं

उत्प्रेरक के रूप में जैव-उत्तेजक

मिट्टी में न्यूनतम छेड़ छाड

सत्यमेव जयते
नीति आयोग

प्राकृतिक खेती

की सफलता की कहानियों का सार-संग्रह

प्राकृतिक खेती के माध्यम से उगाई जाने वाली फसलें

स. क्र.	राज्य	किसानों की संख्या	फसल
1	आंध्र प्रदेश	21	सब्जियां, सिटरस, रेड ग्राम, धान, काला चावल, मक्का, रागी, मूंगफलीआदि
2	बिहार	03	धान, गेंहूँ, मक्का, सब्जियां, सरसों आदि
3	गुजरात	13	केला, फालसा, पपीता, मूंगफली, मिश्रित सब्जियां, धान, गेहूं, नारियल, मूंगफली, मिर्च, चुकंदरआदि
4	हरयाणा	07	गेहूं, चावल, गन्ना, नींबू, केला, अनार, सेब, सब्जियां, जड़ वाली फसलें, गेंदा, चना मटरआदि
5	हिमाचल प्रदेश	14	अनाज और सब्जियों के साथ सेब, सब्जियां, हल्दी, मक्का, सेब और मटर, गन्ना, सूरजमुखी, उड़द

6	केरल	05	सब्जियां, चावल, हल्दी, आर्किड, कंदइत्यादि
7	मध्य प्रदेश	03	आम, धनिया, सरसों, चना, गेहूं, हरा चना, काला चना, हल्दी आदि
8	महाराष्ट्र	08	गन्ना, सोयाबीन, धान, मूंगफली, गेहूं, प्याज, सब्जियां, बीटी कपास, ज्वार आदि
9	उड़ीसा	04	देशी सुगंधित धान, काला चावल, लाल चावल, सब्जियां, लाल चना, हरा चना, बाजरा आदि
10	पंजाब	05	चावल, गेहूं, नाशपाती, सब्जियां, फूल आदि
11	राजस्थान	11	क्लस्टर बीन, मूंग, गेहूं, चना, सरसों, किन्नू, मेथी, मक्का, मेंहदी, तिल आदि
12	उत्तर प्रदेश	14	धान, सुगंधित चावल, गेहूं, गन्ना, पपीता, मूंगफली, आम, आंवला, मौसमी, ब्राह्मी, मोरिंगा, गेहूं + मटर + चना + सूरजमुखी, सरसों + मटर, बाजरा, पुदीना + हरा चना इत्यादि
13	उत्तराखंड	02	गेंहूँ

बिहार के किसानों की सफलता की कहानी

श्रीमती बिन्दु देवी

गाँव	:	पातालघाट
मण्डल	:	मानपुर
जिला	:	गया
संपर्क	:	9939354964
शिक्षा	:	अशिक्षित

अपनाई गई कृषि पद्धतियां:

- प्रकृतिक पद्धति से श्री विधि द्वारा धान, गेहूँ, सरसों, सब्जियों एवं मूँग की खेती की।
- बीज उपचार के लिए श्रीबीजामृत का प्रयोग करते हैं।
- विभिन्न प्रकार के प्राकृतिक अदानों जैसे श्रीजीवामृत, श्रीघनजीवामृत, श्रीप्रणामृत, श्रीगजरामृत आदि का उपयोग किया जाता है।
- रोग, कीट व बीमारियों की रोकथाम हेतु विभिन्न प्रकार के प्राकृतिक कीटनाशकों जैसे श्रीनीमस्त्र, श्रीआगनेयास्त्र, श्रीब्रह्मास्त्र, श्रीदासपर्नियार्क, श्रीलोहस्त्र आदि का इस्तेमाल किया।
- विभिन्न प्रकार के प्राकृतिक कवकनाशी जैसे श्रीमठास्त्र, श्रीसोठास्त्र आदि का उपयोग किया जाता है।
- विभिन्न प्रकार के प्राकृतिक पौधों के विकास नियामक जैसे श्रीअमृत, श्रीमूँगअमृत, श्रीउपलामृत आदि का उपयोग किया जाता है।
- कीट नियंत्रण हेतु फेरोमोन ट्रैप, स्टिकी प्लेट्स, बर्ड पिचर्स, बोनफायर, कीट ट्रैप जैसे विभिन्न प्रकार के प्राकृतिक तरीकों का इस्तेमाल किया।
- कीट प्रबंधन के लिए मिश्रित फसल और बॉर्डर फसल जेसे उपयोग भी सफल हुए है।
- पानी की बचत के लिए ड्रिप सिंचाई का इस्तेमाल किया है।
- मलचिंग के तौर पर जड़ क्षेत्र के चारो ओर सजीव गीली घास और मृत गीली घास का उपयोग किया गया है।
- किचन गार्डन स्थापित करने में पड़ोसी किसानों की सहायता की।
- जिला और राज्य स्तरीय प्राकृतिक कृषि प्रशिक्षण में भाग लिया।

प्राकृतिक और पारंपरिक खेती के बीच तुलना

मानदंड	पृाकृतिक खेती (0.06 हेक्टेयर)	परंपरागत खेती (0.06 हेक्टेयर)
फसल / किस्म	सरसों / आरपी 09 (लोकल)	सरसों (इम्प्रूव्ड किस्म)
खेती की लागत (रु.)	1000	1100
उत्पादन (कुंटल)	2.5	0.40
कुल लाभ (रु.)	25000	4000
शुद्ध लाभ (रु.)	24000	2900
लाभ : लागत अनुपात	24	2.63

मानदंड	पृाकृतिक खेती (0.08 हेक्टेयर)	परंपरागत खेती (0.08 हेक्टेयर)
फसल / किस्म	गेहूँ / एचडी 2967	गेहूँ / एचडी 2967
खेती की लागत (रु.)	1500	2190
उत्पादन (कुंटल)	2.5	1.5
कुल लाभ (रु.)	5000	3000
शुद्ध लाभ (रु.)	3500	810
लाभ : लागत अनुपात	2.3	0.36

मानदंड	पृाकृतिक खेती (0.04हेक्टेयर)	परंपरागत खेती (0.04हेक्टेयर)
फसल / किस्म	आलू / पोखराज	आलू / पोखराज
खेती की लागत (रु.)	3200	5500
उत्पादन (कुंटल)	12	7
कुल लाभ (रु.)	18000	10500
शुद्ध लाभ (रु.)	14800	5000
लाभ : लागत अनुपात	4.6	0.9

लाभ और उपलब्धियां

- न्यूनतम इनपुट लागत।
- खेती की कुल लागत मे कमी।
- फल की अच्छी गुणवत्ता, आकार और बढ़ी हुई शेल्फ लाइफ के साथ उच्च पैदावार।
- प्राकृतिक उर्वरकों और कीटनाशकों के उपयोग से शुद्ध आय में वृद्धि।
- स्वयं एवं सपूर्ण समुदाय को रसायन मुक्त खाद्यान का सेवन और बिक्री करना।
- केंचुए की उच्च संख्या के साथ बेहतर मृदा स्वास्थ्य।

श्रीमती बबीता देवी

ग्राम : बरसोना

मंडल : टनकुप्पा

जिला : गया

संपर्क नंबर : 9631653287

शिक्षा : मैट्रिक

श्रीमती माधुरी देवी

गाँव : बरसोना

मण्डल : टनकपुर

जिला : गया

संपर्क : 9771533421

शिक्षा : मेट्रिक

Thank You!